उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग
DEPARTMENT FOR
PROMOTION OF INDUSTRY AND
INTERNAL TRADE

Gujarat National Law University

शिल्प एक पहचान (वर्तमान समय में चुनौतियाँ)

संकल्पना:

अधिकांश शिल्पों की उत्पत्ति सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुसार क्षेत्र और कारीगर समुदायों के संदर्भ में हुई है। इसने शिल्प समुदायों पर परस्पर निर्भरता के कारण समृद्ध भारतीय जीवन और सामुदायिक संबंधों का एक मजबूत ताना-बाना तैयार किया है। कारीगरों को जो प्रतिभा और मूल्य ज्ञान उनकी पिछली पीढ़ियों से विरासत में मिला है उनको पहचानने की आवश्यकता है। वर्तमान बाजार, शिल्प और उनके कारीगरों के समक्ष उनके बुनियादी मूल्यों संबंधित कई अनदेखी चुनौतियां पेश करता है। कारीगरों, डिजाइनरों और विपणन एजेंसियों को संवेदनशील बनाने के लिए इस संबंध में एक संवाद को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की सराहना करते हुए उसका संरक्षण सुनिश्चित करने के उद्देश्य से यह ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया है। कार्यक्रम के व्यापक और कुशल संचार के लिए, हिंदी को इस कार्यक्रम के संचार की प्राथमिक भाषा के रूप में चुना जाएगा, जिससे व्यापक दर्शकों, विशेष रूप से कारीगरों को शामिल करने में मदद मिलेगी, जो हिंदी में अपने विचारों को व्यक्त करने में अधिक सहज हो सकते हैं।

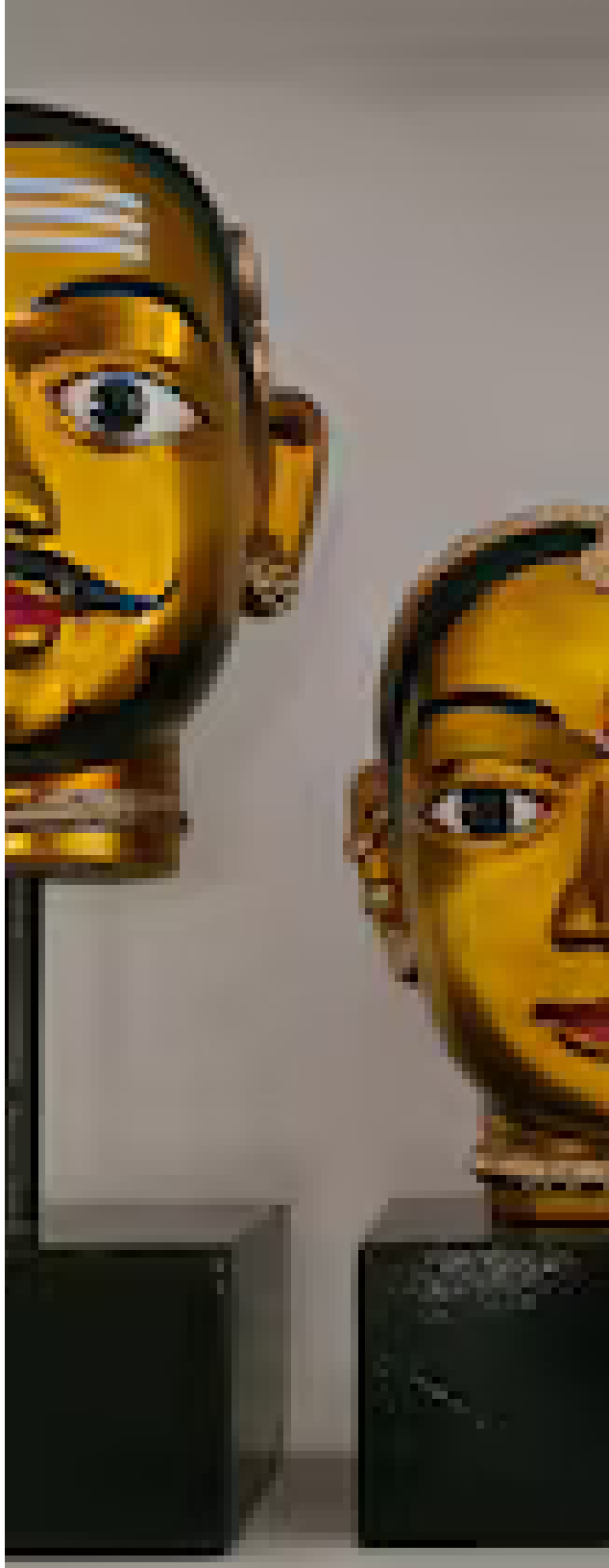

उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग
DEPARTMENT FOR
PROMOTION OF INDUSTRY AND
INTERNAL TRADE

Gujarat National Law University

आयोजक के बारे में (DPIIT IPR CHAIR, GNLU)

मानव संसाधन और विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) ने बौद्धिक संपदा शिक्षा, अनुसंधान और सार्वजनिक आउटरीच (आईपीईआरपीओ) की एक केंद्रीय योजना की स्थापना की थी जिसके तहत आईपीआर अध्यक्षों की स्थापना की गई थी। उसके बाद, भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) ने वर्ष 2016 में समग्र शिक्षा और अकादमी (एसपीआरआईएचए) के लिए आईपीआर में शिक्षाशास्त्र और अनुसंधान के लिए एक योजना शुरू की, जिसके तहत आईपीआर चुनिंदा विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों में पीठ स्थापित की गई हैं। यह 2016 में भारत सरकार द्वारा शुरू की गई राष्ट्रीय आईपीआर नीति के अनुसार था, जो धारा 7.2 के तहत उद्देश्यों में से एक के रूप में घोषित करता है, "गुणवत्तापूर्ण शिक्षण और अनुसंधान प्रदान करने के लिए उच्च शिक्षा के शैक्षणिक संस्थानों में आईपी चेयर को मजबूत करना; शिक्षण क्षमता और पाठ्यक्रम विकसित करें और प्रदर्शन- आधारित मानदंडों पर उनके काम का मूल्यांकन करें।"

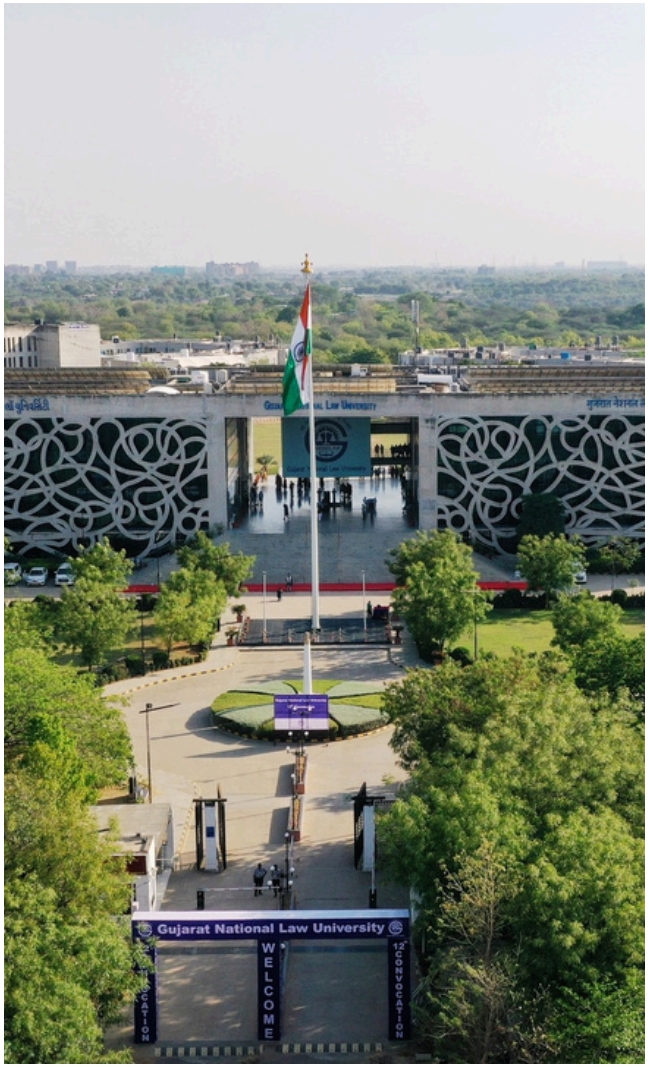

कुछ पात्र संस्थानों में से, गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी को बौद्धिक संपदा (आईपी) शिक्षा को बढ़ावा देने और आईपी अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए आईपीआर चेयर स्थापित करने की मंजूरी दी गई है।

डीपीआईआईटी आईपीआर चेयर, जीएनएलयू की अध्यक्षता डॉ. अन्नम्मा सैमुअल (आईपीआर चेयर प्रोफेसर) करती हैं ।

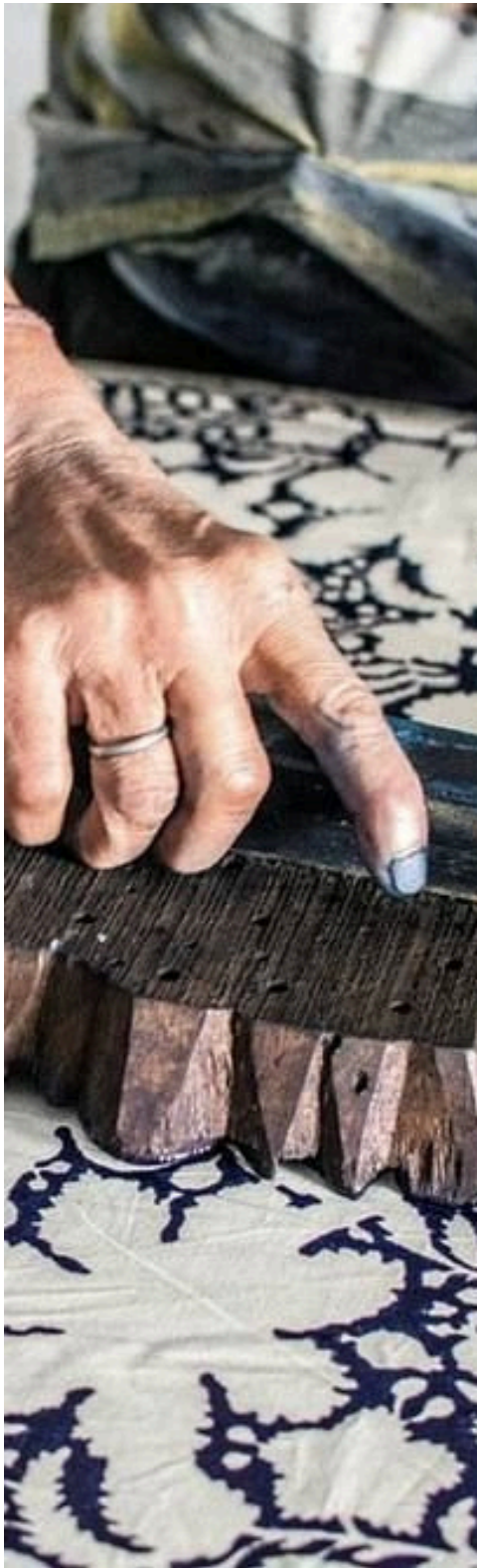

Gujarat National Law University

कार्यक्रम के वक्ता : डॉ मदन मीणा

डॉ मदन मीणा एक 'प्रैक्टिसिंग विज़ुअल आर्टिस्ट' और शोधकर्ता हैं, जो ग्रामीण, घुमंतू और आदिवासी समुदायों के साथ व्यापक रूप से काम कर रहे हैं। अपने क्षेत्र और वहां के लोगों के साथ उनके व्यक्तिगत जुड़ाव ने उन्हें अपने डॉक्टरेट थीसिस के रूप में मीना जनजाति की कला को चुनने के लिए प्रेरित किया। मीणा जनजाति की महिलाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए, उन्होंने उनकी 'भित्ति चित्र कला' को देश और विदेश में दस्तावेजित और प्रदर्शित किया है। इस विषय पर उनका काम उनकी दो प्रकाशित पुस्तकों जॉय ऑफ क्रिएटिविटी; और नर्चरिंग वॉल्स में उपलब्ध है। एक क्यूरेटर के रूप में, उन्होंने अर्ना झरना: द डेजर्ट म्यूजियम ऑफ राजस्थान, जोधपुर के लिए झाड़ू पर एक प्रदर्शनी डिजाइन की। वह फिल्म झारू कथा (ब्रूम स्टोरीज़) के लिए एसोसिएट डायरेक्टर भी थे। लोकगीत अध्ययन में उनकी रुचि ने उन्हें मध्य और दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में विभिन्न भाषाओं में गाए जाने वाले तेजाजी गाथागीत के विविध प्रदर्शनों पर काम करने के लिए प्रेरित किया। इसके लिए उन्हें प्रारंभ में विश्व मौखिक साहित्य परियोजना के तहत कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से एक अनुदान द्वारा समर्थन मिला और उन्होंने तेजाजी गाथा नामक एक पुस्तक और इसका ऑडियो डीवीडी प्रकाशित किया। बाद में, गाथा पर अपने दस्तावेजीकरण को विस्तारित करने के लिए उन्हें भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय से सीनियर रिसर्च फेलोशिप प्राप्त हुआ। मदन को पूर्वी राजस्थान के जोगी समुदाय के बीच लोककथाओं का अध्ययन करने के लिए 'सहपीडिया-यूनेस्को फेलोशिप' भी मिली।

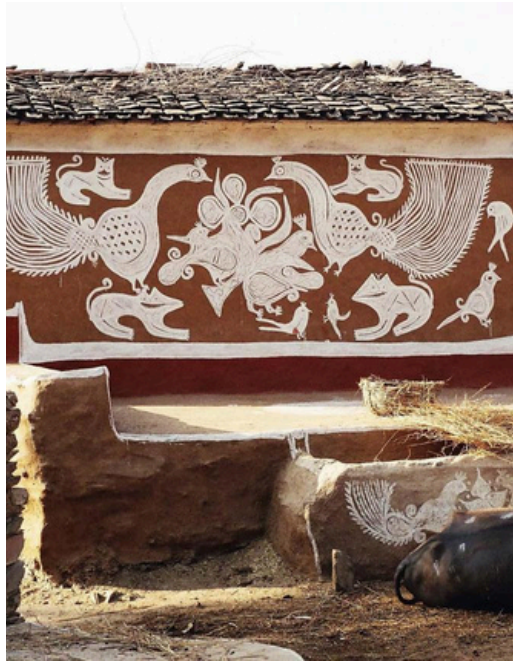

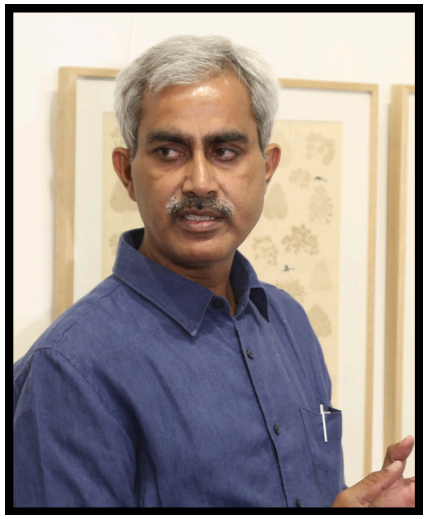

भाषाओं के बारे में मदन की जिज्ञासा ने उन्हें विमुक्त और खानाबदोश जनजातियों की गुप्त भाषा पर काम शुरू करने के लिए प्रेरित किया। इसके लिए उन्हें फायरबर्ड फाउंडेशन फॉर एंथ्रोपोलॉजिकल रिसर्च, यूएसए से फेलोशिप मिली। पीपल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया परियोजना के लिए उन्होंने "द लैंग्वेजेज ऑफ राजस्थान" नामक एक खंड का सह-संपादन किया, जिसमें 30 क्षेत्रीय भाषाएं शामिल हैं। उन्होंने उत्तर और पश्चिमी भारत के घुमंतू और असूचित जनजातियों (डीएनटी) पर विभिन्न सर्वेक्षण और अनुसंधान किए हैं। वर्तमान में वे इन समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास और जीवन कौशल को उजागर करने के लिए काम कर रहे हैं। मदन लगातार लुप्त होती शिल्प परंपराओं का अध्ययन करते रहते हैं, जो विषय वह भारत के कुछ डिजाइन संस्थानों में अतिथि शिक्षक के रूप में भी पढ़ाते हैं। वह भाषा अनुसंधान और प्रकाशन केंद्र-वडोदरा के ट्रस्टी, कोटा हेरिटेज सोसाइटी के कार्यकारी सदस्य और ग्रामीण शिक्षा केंद्र-सवाई माधोपुर के कार्यकारी बोर्ड के सदस्य हैं। वर्तमान में उनकी एक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी गुजरात में आदिवासी अकादमी के साथ है जहां वह पिछले पांच वर्षों से मानद निदेशक हैं।

Gujarat National Law University

उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग
DEPARTMENT FOR
PROMOTION OF INDUSTRY AND
INTERNAL TRADE

Gujarat National Law University

पंजीकरण के विवरण

कृपया अपनी ईमेल आईडी के साथ पंजीकरण फॉर्म (Google फॉर्म) भरें

फॉर्म लिंक: https://forms.gle/JhJAxpDuWcGmVCJN8

(फीस) - (नि:शुल्क)

पंजीकरण की अंतिम तारीख : 13 अगस्त (दोपहर 3:00 बजे तक

इस कार्यक्रम में कौन शामिल हो सकता है?
कोई भी इच्छुक कारीगर और बुनकर

आयोजन की जानकारी

13 अगस्त, 2024 (मंगलवार)

समय: शाम 5 बजे - शाम 6 बजे

माध्यम : ऑनलाइन, Google Meet Application पर

मीटिंग लिंक: https://meet.google.com/bka-hhcc-kqr

किसी भी प्रश्न के लिए कृपया
dpiitchair@gnlu.ac.in पर संपर्क करें

संपर्क: 9127018953 (ज्योतिरिंग पुजारी)

अस्वीकरण: इस पोस्टर में इस्तेमाल की गई तस्वीरें सिर्फ़ शैक्षणिक और सूचनात्मक उद्देश्यों के लिए हैं। इस्तेमाल की गई तस्वीरों के सभी अधिकार उनके संबंधित स्वामियों के हैं। हम इस्तेमाल की गई किसी भी तीसरे पक्ष की सामग्री पर स्वामित्व का दावा नहीं करते हैं।